Manushyata Question Answers

Q1. कवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार, मनुष्य कब अहंकारी हो जाता है और क्यों? (CBSE 2019)

उत्तर – कवि मैथिलीशरण गुप्त का मानना है कि मनुष्य धन-सम्पति आने पर अहंकारी हो जाता है। क्योंकि वह इस तुच्छ धन-संपत्ति की प्राप्ति होने पर स्वयं को बड़ा महत्पूर्ण समझने लगता है। उसे अपनी सम्पति का अभिमान हो जाता है। वह सम्पत्तिविहीन लोगों को तुच्छ एवं व्यर्थ समझने लगता है। धन के बल पर अपने आप को सुरक्षित अनुभव करके वह व्यर्थ घमंड करने लगता है तथा धन-सम्पति को ही अपना सर्वस्व मानने लगता है। वह यह भूल जाता है कि सम्पूर्ण विश्व के मनुष्यों की रक्षा करने वाला ईश्वर ही सर्वशक्तिशाली है तथा वही सबका नाथ अथवा स्वामी है।

Q2. कवि किसके जीने और मरने को एक समान बताता है?

उत्तर – इस नश्वर संसार में हजारों-लाखों लोग प्रतिदिन मरते हैं। इनकी मृत्यु को लोग थोडे ही दिन बाद भूल जाते हैं। ये लोग अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए ही जीते हैं। उन्हें दूसरों के दुख-पीड़ा से कुछ लेना-देना नहीं होता है। दूसरों के बारे में न सोचने के कारण ऐसे लोगों की मृत्यु से कुछ लेना-देना नहीं होता है। आत्मकेंद्रित होकर अपनी स्वार्थ हित-साधना में लगे रहने वालों के जीने और मरने को एक समान बताया है।

Q3. अखंड आत्मभाव भरने के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर – अखंड आत्मभाव भरने के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि लोग एक-दूसरे से वैमनस्य, ईष्र्या, द्वेष आदि भाव न रखें और सारी दुनिया के लोगों के साथ एकता अखंडता बनाए रखने हेतु सभी को अपना भाई मानें। प्रायः लोग जाति-धर्म, भाषा क्षेत्रवाद, संप्रदाय आदि की संकीर्णता में फँसकर मनुष्य को भाई समझना तो दूर मनुष्य भी नहीं समझते हैं। कवि इसी संकीर्णता का त्याग करने और सभी के साथ आत्मीयता बनाने की बात कर रहा है।

Q4. 'मनुष्यता' कविता में 'अभीष्ट मार्ग' किसे कहा गया है और क्यों? (CBSE 2012)

उत्तर – 'मनुष्यता' कविता में 'अभीष्ट मार्ग' ऐसे मार्ग को कहा गया है, जिसके माध्यम से सभी व्यक्तियों की इच्छाओं को पूरा किया जा सके , जिससे समस्त समाज का कल्याण हो, उसका लाभ हो। क्योंकि ऐसे मार्ग पर चलते हुए मनुष्य किसी भी संकट एवं बाधाओं को पार करता हुआ, निरंतर निर्धारित लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता है। इस मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति मित्रता और एकता का भाव बनाए रखते हुए जनकल्याण हित के कार्य करता रहता है।

Q5. हमें किसी को अनाथ क्यों नहीं समझना चाहिए?

उत्तर – हमें किसी को इसलिए अनाथ नहीं समझना चाहिए क्योंकि जिस ईश्वर से शक्ति और बल पाकर हम स्वयं को सनाथ समझते हुए दूसरों को अनाथ समझते हैं वही ईश्वर दूसरों की मदद के लिए भी तैयार रहता है। उसके लंबे हाथ मदद के लिए सदैव आगे बढ़े रहते हैं। वह अपनी अपार शक्ति से सदा दूसरों की मदद के लिए तैयार रहता है, इसलिए हमें दूसरों को अनाथ नहीं समझना चाहिए।

Q6. उशीनर कौन थे? उनके परोपकार का वर्णन कीजिए।

उत्तर – उशीनर गांधार के राजा थे। उन्हें शिवि के नाम से भी जाना जाता है। एक बार जब वे बैठे थे तभी एक कबूतर बाज़ से भयभीत होकर शिवि की गोद में आ दुबका। इसी बीच बाज़ शिवि के पास आकर अपना शिकार वापस माँगने लगा। जब राजा ने कबूतर को वापस देने से मना किया तो उसने राजा से कबूतर के वजन के बराबर माँस माँगा। राजा ने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। एक कबूतर पर दया करने के कारण राजा प्रसिद्ध हो गए।

Q7. कवि ने महाविभूति किसे कहा है और क्यों?

उत्तर – कवि ने मनुष्य की सहनशीलता को महाविभूति कहा है। इसका कारण यह है कि सहानुभूति के कारण मनुष्य दूसरों के दुख की अनुभूति करता है और उसे परोपकार करने की प्रेरणा मिलती है। यदि मनुष्य के भीतर सहानुभूति न हो तो कोई व्यक्ति चाहे सुखी रहे या दुखी वह उदासीन रहेगा और वह परोपकार करने की सोच भी नहीं सकता है।

Q8. 'मनुष्यता' कविता के आधार पर किन्हीं तीन मानवीय गुणों के बारे में लिखिए। (CBSE 2018)

उत्तर – राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'मनुयषयता' कविता के आधार पर हमें मानवीय गुणों पर चलने की सलाह दी है। कवि के अनुसार, जीना मरना उसी का सार्थक है, जो दूसरों के लिए जीता मरता है। परोपकार, दयालुता और उदारता ; ये तीन मानवीय गुण ऐसे हैं, जो मानव जीवन को सार्थक बनाने में सक्षम है। केवल अपने लिए जीना पशु-प्रवृति है, जबकि दूसरों के लिए जीना ही सच्चे अर्थों में मनुष्यता है।

Q9. मनुष्यता कविता का प्रतिपादन अपने शब्दों में लिखिए। (CBSE 2018)
अथवा
'मनुष्यता' कविता का मूल भाव अपने शब्दों में समझाइए। (CBSE 2020)

उत्तर – 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त मनुष्य मात्र के बंधुत्व को परिभाषित करते हुए, हमें मनुष्यता से आवृत गुणों के मार्ग पर चलने की सलाह देते हैं। उनके अनुसार, जीना मरना उसी का सार्थक है, जो दूसरों के लिए जीता मरता है। परोपकार, दयालुता और उदारता ; ये तीन मानवीय गुण ऐसे हैं, जो मानव जीवन को सार्थक बनाने में सक्षम है। दूसरों का हित-चिंतन भी अपने और अपनों के हित-चिंतन की तरह महत्पूर्ण होना चाहिए। केवल अपने लिए जीना पशु-प्रवृति है, जबकि दूसरों के लिए जीना ही सच्चे अर्थों में मनुष्यता है।

Q10. 'मनुष्यता' कविता में कवि ने मनुष्य के किस कृत्य को अनर्थ कहा है और क्यों ?

उत्तर – 'मनुष्यता' कविता में कवि ने मनुष्य को यह बताने का प्रयास किया है कि सभी मनुष्य आपस में ई ई हैं। इस सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि सबको जन्म देने वाला ईश्वर एक है। पुराणों में भी इस बात के प्रमाण हैं कि सृष्टि का रचनाकार वही एक है। वह सारे जगत का अजन्मा पिता है। फिर मनुष्य-मनुष्य में थोड़ा-बहुत जो भेद है। वह उसके अपने कर्मों के कारण है परंतु एक ही ईश्वर या आत्मा का अंश उनमें समाए होने के कारण सभी एक हैं। इतना जानने के बाद भी कोई मनुष्य दूसरे मनुष्य की अर्थात् अपने भाई की मदद न करे और उसकी

व्यथा दूर न करे तो वह सबसे बड़े अनर्थ हैं। इसका कारण यह है कि ऐसा न करके मनुष्य अपनी मनुष्यता को कलंकित करता है।

Q11. 'मनुष्यता' कविता की वर्तमान में प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – मनुष्यता कविता हमें सच्चा मनुष्य बनने की राह दिखाती है। मनुष्य को इस कविता द्वारा सभी मनुष्यों के अपना भाई मानने, उनकी भलाई करने और एकता बनाकर रखने की सीख दी गई है। कविता के अनुसार सच्चा मनुष्य वही है जो सभी को अपना समझते हुए दूसरों की भलाई के लिए ही जीता और मरता है। वह दूसरों के साथ उदारता से रहता है और मानवीय एकता को दृढ़ करने के लिए प्रयासरत रहता है। वह खुद उन्नति के पथ पर चलकर दूसरों को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। वर्तमान में इस कविता की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है क्योंकि आज दुनिया में स्वार्थवृत्ति, अहंकार, लोभ, ईर्ष्या, छल-कपट आदि बढ़ रहा है जिससे मनुष्य-मनुष्य में दूरी बढ़ रही है।

Q12. 'मनुष्यता' कविता में वर्णित उशीनर, दधीचि और कर्ण के उन कार्यों का उल्लेख कीजिए जिससे वे मनुष्य को मनुष्यता की राह दिखा गए।

उत्तर – 'मनुष्यता' कविता में वर्णित उशीनर, दधीचि और कर्ण द्वारा किए गए कार्य इस प्रकार हैं –

उशीनर – इन्हें राजा शिवि के नाम से भी जाना जाता है। राजा उशीनर ने अपनी शरण में आए एक कबूतर की रक्षा के लिए अपने शरीर से उसके वजन के बराबर माँस बाज़ को दे दिया। इस तरह दयालुता का अनुकरणीय कार्य किया।

दधीचि – महर्षि दधीचि ने दानवों को पराजित करने के लिए अपने शरीर की हड्डयाँ दान दे दीं जिनसे बज्र बनाकर दानवों को युद्ध में हराया गया और मानवता की रक्षा की गई।

कर्ण – कर्ण अत्यंत दानी वीर एवं साहसी योद्धा था। उसने ब्राह्मण वेशधारी इंद्र को अपना कवच-कुंडल दान दे दिया। यह दान बाद में उसके लिए जानलेवा सिद्ध हुआ।

इस प्रकार उक्त महापुरुषों ने अनूठे कार्य करके मानवता की रक्षा की और त्याग एवं परोपकार करके मनुष्य को मनुष्यता की राह दिखाई।

Q13. 'मनुष्यता' कविता से हमें जीवन की क्या सीख मिलती है और कैसे ? (CBSE 2019)
अथवा
मनुष्यता कविता के माध्यम से कवि क्या सन्देश देना चाहते हैं। (CBSE 2017)

उत्तर – राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने बंधुत्व की भावना को सबसे बड़ी विवेकशीलता माना है। 'मनुष्यता' कविता के अनुसार , इस संसार में कोई भी व्यक्ति पराया नहीं है। मनुष्य मानवतावाद का पक्षधर होना चाहिए। सब मनुष्य भाई-भाई हैं; प्रत्येक मनुष्य के प्रति यही दृष्टिकोण उसकी विवेकशीलता का परिचायक है।

कवि ने सर्वधर्म समभाव की चेतना को उभारते हुए, सृष्टि को ईश्वर की संरचना माना है। मनुष्य को अपने – अपने कर्मानुसार विभिन्न जीवन व् जन्म मिलते हैं। बाह्य रूप से इस कर्मफल की विभिन्नता के दर्शन होते हैं। परन्तु प्रत्येक प्राणी में उस परमात्मा का अंश विध्यमान है। इसलिए जीना-मरना उसी का सार्थक है, जो दूसरों के लिए जीता – मरता हैं।

परोपकार , दयालुता ,उदारता आदि गुण जीवन को सार्थक बनाने में सक्षम है। दूसरों का हित चिंतन अपनों के हिट चिंतन की तरह ही महत्पूर्ण है। केवल अपने लिए जीना पशु-प्रवृति है , जबकि दूसरों के लिए मनुष्यता है।

प्रश्न 14 – 'मनुष्यता' कविता में कवि ने क्यों कहा है कि हमें मृत्यु से नहीं डरना चाहिए?

उत्तर – 'मनुष्यता' कविता में कवि ने कहा है कि मृत्यु से नहीं डरना चाहिए क्योंकि मृत्यु तो निश्चित है इसे कोई भी टाल नहीं सकता। जिसने इस धरती पर जन्म लिया है उसे एक न एक दिन मरना ही है।

प्रश्न 15 – कैसे मनुष्यों का जीना और मरना दोनों बेकार है और क्यों?

उत्तर – जो मनुष्य दूसरों के लिए कुछ भी ना कर सकें, उनका जीना और मरना दोनों बेकार है । वह मनुष्य मर कर भी कभी नहीं मरता जो अपने लिए नहीं दूसरों के लिए जीता है, क्योंकि अपने लिए तो जानवर भी जीते हैं। कवि के अनुसार मनुष्य वही है जो दूसरे मनुष्यों के लिए मरे अर्थात जो मनुष्य दूसरों की चिंता करे वही असली मनुष्य कहलाता है।